“सँजोने हेतु आशीर्वाद”
का परिचय

ईशा सरदेसाई द्वारा लिखित

शनिवार, ११ जुलाई, २०२०

इस वर्ष मार्च से, सार्वभौमिक सिद्धयोग संघम् को आमन्त्रित किया गया है कि वे अनेक ‘मन्दिर में रहो’ सत्संगों में भाग लें और ऐसा करते हुए, बेहतर तरीक़े से यह समझें व सीखें कि इस वैश्विक महामारी के दौरान वे अपनी साधना को और भी सुदृढ़ कैसे बना सकते हैं।

यदि आप ‘मन्दिर में रहो’ सत्संगों में भाग लेते रहे हैं तो आपने ग़ौर किया होगा कि इनमें से कई सत्संगों के समापन पर एक विशेष तत्त्व होता है। निःसन्देह, मैं उन अनुपम वीडिओज़ की बात कर रही हूँ जिनके माध्यम से साधना के विषय में गुरुमाई जी की सिखावनियाँ प्राप्त होती हैं और साथ ही उनका मार्गदर्शन भी प्राप्त होता है कि आप उन सभी चीज़ों को कैसे सँभालें जो हो सकता है आपके अन्तर में घटित हो रही हों। श्रीगुरुमाई ने इन वीडिओज़ के लिए शीर्षक दिया है, “सँजोने हेतु आशीर्वाद।”

जी हाँ—‘मन्दिर में रहो’ सत्संगों के समापन पर आपको जो प्राप्त होती आई हैं, वे निश्चित रूप से, गुरुमाई जी की सिखावनियाँ हैं और उनके आशीर्वाद भी। वे उनका प्रसाद हैं। सिद्धयोग पथ पर जब हमें श्रीगुरु से प्रसादरूप में कुछ प्राप्त होता है, तो उसका फल कई गुना बढ़ जाता है।

मेरे लिए, गुरुमाई जी के मुखारविन्द से निकला हुआ हर शब्द अनमोल है। और ऐसा केवल इसलिए नहीं कि मैं एक लेखिका हूँ और भाषा पर अधिक ध्यान देती हूँ; ऐसा केवल इसलिए भी नहीं क्योंकि मैं गुरुमाई जी की सिखावनियों की अतीव सुन्दरता से हमेशा ही मन्त्रमुग्ध हो जाती हूँ [हालाँकि होता यही है!]। ऐसा इसलिए है, क्योंकि गुरुमाई जी के शब्दों में मुझे उनकी कृपा की अनुभूति होती है; मुझे उनके प्रेम की, उनकी करुणा की, सबके उत्थान हेतु उनके संकल्प की अनुभूति होती है।

तो यही है जो मुझे महसूस होता है, जब मैं ‘मन्दिर में रहो’ सत्संगों में प्रदान की गई गुरुमाई जी की सिखावनियाँ व उनके आशीर्वाद ग्रहण करती हूँ। और ठीक ऐसा ही मुझे तब भी महसूस होता है जब मैं उस शीर्षक पर मनन करती हूँ जो गुरुमाई जी ने इन सिखावनियों व आशीर्वादों को प्रदान किया है। “सँजोने हेतु आशीर्वाद।” इस शीर्षक के शब्दों द्वारा ही गुरुमाई जी एक बार फिर अपने आशीर्वाद हमें प्रदान कर रही हैं।

मुझे यह भी जिज्ञासा हुई कि मैं इस शीर्षक के अर्थ के विषय में खोज करूँ। मैंने पाया कि इस शीर्षक में गुरुमाई जी द्वारा प्रयुक्त शब्दावली में एक सौम्य प्रयत्न, एक विशेष प्रकार का सूक्ष्म कार्य निहित है। ये आशीर्वाद हैं—और ये आशीर्वाद हैं *जिनके साथ हमें कार्य करना है।* ये आशीर्वाद हैं जिन्हें हमें *सँजोना है।*

'सँजोना'—इस शब्द के लिए अंग्रेज़ी में शब्द है *Treasure* जिसका अर्थ 'ख़ज़ाना' भी है। *Treasure,* शब्द का जब एक क्रिया के रूप में प्रयोग किया जाता है, तो इसकी दो परिभाषाएँ होती हैं। इसका एक अर्थ है, किसी चीज़ को इतना अनमोल मानना कि उसे सँजोकर रखना, उसके मूल्य व महत्त्व को समझना। इसका दूसरा अर्थ है, किसी चीज़ को सहेजकर, सँभालकर रखना, विशेषकर अपने मन में सँभालकर रखना ताकि भविष्य में उसका उपयोग किया जा सके। अतः, इन आशीर्वादों को सँजोने का अर्थ है, इन्हें अपने मन और हृदय में धारण करना, इनमें निहित प्रज्ञान को इस तरह आत्मसात् करना जिससे कि ये आपके लिए एक आश्रय बन जाएँ, पारसमणि बन जाएँ—विशेष तौर पर इस समय जब ऐसा लग सकता है कि यह संसार ही डगमगा रहा है। इन आशीर्वादों को सँजोने का अर्थ है, इनमें बताई गई दिशा को पहचानना, उस पर ध्यान देना और ऐसा करके यह आश्वासन पाना कि, हाँ, आगे बढ़ने के लिए एक रास्ता *निश्चित ही है,* फिर भले ही ऐसा प्रतीत हो रहा हो कि सब कुछ ठहर-सा गया है। इन आशीर्वादों को सँजोने का अर्थ है, चाहे आपके आस-पास के संसार में जो कुछ भी घटित हो रहा हो, या आपके अन्दर के संसार में जो कुछ भी उतार-चढ़ाव हो रहे हों, यह याद रखना कि *आप सिद्धयोग पथ पर हैं।* आपको श्रीगुरु की कृपा प्राप्त है। सिद्धयोग अभ्यासों के रूप में आपके पास एक व्यवसथा है जो आपको सम्बल दे सके, और वह अपने आप में परिपूर्ण है। आपको बस यही करना है कि आप ठहरें, श्वास लें, और किसी एक सिखावनी पर बार-बार मनन करते रहें। और फिर—बस देखिएगा कि क्या होता है। एक प्रकाश जगमगा उठता है। आपके सामने का रास्ता स्पष्ट हो जाता है। इतना ही नहीं कि आपको अपना लक्ष्य केवल दिख रहा है और इसने बस अभी-अभी कोहरे से बाहर निकलकर एक स्पष्ट व प्रत्यक्ष-सा आकार ले लिया है—बल्कि आपका लक्ष्य तो आपकी पहुँच के भीतर है।

मुझे इस बात में ज़रा-सा भी सन्देह नहीं है कि आप सभी, विश्वभर के सिद्धयोगी और नए साधक, गुरुमाई जी की सिखावनियों व उनके आशीर्वादों को सँजोते आए हैं और अपनी साधना में इनका परिपालन करते आए हैं। मैं अक्सर पाती हूँ कि मुझे "सँजोने हेतु आशीर्वाद" से कोई वाक्यांश या कोई उद्धरण स्मरण हो रहा होता है—सत्संग समाप्त होने के बाद काफ़ी देर तक यह मन के किसी कोने में बना रहता है। और जब मुझे यह एहसास होता है कि मेरे अन्तर में यह घटित हो रहा है और फिर जब मैं तत्परता से उस पर मनन-चिन्तन शुरू करती हूँ, तो यह धीरे-धीरे मेरे अन्तरंग के उस भाग को रोशन कर देता है जिसके बारे में इससे पहले मुझे पता भी नहीं होता कि मुझे उस पर ध्यान

देने की, उसका अन्वेषण करने की या उस पर पुनः खोज करने की आवश्यकता है। अभी हम उस दौर में हैं जब हमें व्यक्तिगत तौर पर और सामूहिक तौर पर आत्मान्वेषण करना आवश्यक है। मैंने देखा है कि गुरुमाई जी की सिखावनियों का अध्ययन कर, उनके आशीर्वाद ग्रहण कर मैं सबसे हितकारी अन्वेषण कर पाई हूँ—यह अन्वेषण कि मैं कौन हूँ; संसार के बारे में मेरी समझ क्या है; आध्यात्मिक पथ की विद्यार्थिनी होने के नाते मैं अपने लक्ष्य तक पहुँचने के लिए कौन-से क़दम उठा रही हूँ; और जो कुछ भी मुझे दिया गया है, जो साधन मेरे पास हैं, इस समय वे सचमुच कैसे उपयोग में आ सकते हैं।

अनेक लोग यह चाहते रहे हैं कि वे "सँजोने हेतु आशीर्वाद" को पुनः पढ़ सकें जिससे कि वे बिलकुल सही ढंग से यह समझ सकें कि गुरुमाई जी ने क्या कहा, और उन आदेशों पर मनन कर सकें जो गुरुमाई जी ने इन आशीर्वादों में दिए हैं। उनकी इच्छा के पीछे जो प्रेरणा है—जो उनकी ललक को और भी प्रबल बनाती है—वह और कुछ नहीं बल्कि गुरुमाई जी के शब्दों के अनुसार जीवन जीने की उत्कट कामना ही है। अगर *आपकी भी* यही इच्छा रही है, तो समझिए कि यह पूरी हो गई। और—मुझे उम्मीद है कि आपका हृदय शान्तिमय है।

© २०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।